जगत को उल्टा-पुल्टा कर देना (17:6)

यहूदियों ने थिस्सलुनीके में मसीहियों को पकड़ा और खींच कर अधिकारियों के सामने लाकर उन पर आरोप लगाया ''कि ये लोग जिन्होंने जगत को उल्टा-पुल्टा कर दिया है, यहां भी आए हैं'' (प्रेरितों 17:6)।[1] इन शब्दों में हम पर गंभीर आरोप लगाया गया है। क्या हमने ''जगत को उल्टा-पुल्टा किया है''? क्या हमने इसे ज़रा सा हिलाया भी है? किसी ने कहा है कि पहली सदी की कलीसिया की तुलना आज की कलीसिया के साथ करना, किसी परमाणु हथियार की बहरा कर देने वाली गर्जना की तुलना किसी खिलौना पिस्तौल के चलने से करना है।[2]

शायद हम विरोध करें, ''यदि हमें इतना पता होता कि जो कुछ पहली कलीसिया ने प्राप्त किया वह *कैसे* हुआ, तो हम भी वैसे ही करते।'' पहली कलीसिया की सामर्थ के ''रहस्य'' को खोजना कठिन नहीं है। प्रेरितों के काम की पुस्तक को सरसरी तौर पर पढ़ने से ही उनके गुणों का पता चल जाता है जिनसे उन्हें सफलता मिली।

मसीहियत के प्रति व्यवहार

आरम्भिक मसीहियों के लिए, मसीहियत कोई भावनात्मक मुक्ति नहीं थी; बल्कि यह तो मसीह के लिए उनका दु:ख भोगना था। यह जीवन का *कोई* ढंग नहीं, बल्कि जीवन का एक ही *ढंग* था। यह कुछ विशेष परिस्थितियों पर विचार करने का नहीं, बल्कि सभी परिस्थितियों पर विचार करने का विशेष ढंग था (गलतियों 2:20)। परिणामस्वरूप, आरम्भिक मसीही अपना सब कुछ देने के लिए तैयार थे: उन्होंने अपनी सम्पत्तियां बेचकर दूसरों को दे दीं (प्रेरितों 5)। उन्होंने अपने घर, अपने परिवार, अपनी नौकरियां त्याग दीं (प्रेरितों 8)। कइयों ने तो अपने जीवन ही त्याग दिए (प्रेरितों 7; 12)। फलस्वरूप, कलीसिया का विकास बड़ी तेजी से हुआ।

''परन्तु निश्चय ही परमेश्वर हमसे इतनी बड़ी अपेक्षा नहीं करता!'' आपको ऐसा लग सकता है। आपको कैसे पता? आपके लिए मसीहियत का क्या अर्थ है? क्या आप इसे सारे संसार में पहुंचाने के लिए कोई भी बलिदान देने के इच्छुक हैं?

जीवन के प्रति व्यवहार

मसीहियत के प्रति आरम्भिक मसीहियों के व्यवहार ने जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण बदल दिया। उन्हें यीशु में नया जीवन मिला था (रोमियों 6:3-6) और उन्होंने इसे बड़ी गम्भीरता से लिया (प्रेरितों 19:19, 20)। वे इसके लिए कोई समझौता नहीं कर सकते थे एक अधिकारी ने तो यहां तक कहा है कि कलीसिया के आरम्भिक दिनों में, यदि कोई व्यक्ति बिना किसी कारण लगातार तीन आराधना सभाओं में न जाता, तो उसकी संगति अपने आप ही समाप्त हो जाती थी।[3]

संसार के लोगों को हम तब तक प्रभावित नहीं कर सकते जब तक हम संसार से कुछ अलग नहीं करते! बहुत वर्ष पहले की बात है, एक प्रचारक ने छह भारतीय कबीलों के सरदार के पास जाकर लोगों में मिशन कार्य करने की अनुमति के लिए बिनती की। उसे उत्तर एक भाषण के रूप में मिला। यहां उसके कुछ अंश दिए जा रहे हैं:

> भाई, हमें बताया गया है कि तुम यहां पर गोरे लोगों में प्रचार कर रहे हो। ये लोग हमारे पड़ोसी हैं। हम उन्हें जानते हैं। हम थोड़ी देर प्रतीक्षा करके देखेंगे कि उन पर तुम्हारे प्रचार का क्या असर होता है। यदि हमें लगे कि इससे उनका भला हुआ है अर्थात वे ईमानदार हो गए हैं, और उन्होंने भारतीयों को धोखा देना बंद कर दिया है, तो हम तुम्हारी बात पर फिर से विचार करेंगे।

दूसरों के प्रति व्यवहार

जो के साथ शादी से पहले, मैं अबिलेन, टैक्सास में रहता था और वह मूर, ओक्लाहोमा में रहती थी। मेरे पत्रों में दो बातें मुख्य होती थीं। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने एक पत्र में लिखा था: मैंने कहा कि मैंने जो भी लिखा हो, मुझे उम्मीद थी कि वह उसमें उस प्रेम को जो मैं उससे करता था, ''उन पंक्तियों में पढ़ लेगी।'' मैंने और लिखा: ''इस पत्र में, तुम्हें कल्पना नहीं करनी पड़ेगी।'' फिर मैंने लाल पैन लेकर पत्र में सभी पंक्तियों के बीच लिख दिया, ''मैं तुमसे प्रेम करता हूं, मैं तुमसे प्रेम करता हूं, मैं तुमसे प्रेम करता हूं।'' प्रेरितों के काम में ''प्रेम'' शब्द तो नहीं मिलेगा, लेकिन जिस प्रकार से यह लिखी गई है, उससे इस पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति के बीच परमेश्वर का मनुष्य से प्रेम और आरम्भिक मसीहियों का परमेश्वर तथा दूसरे लोगों से प्रेम दिखाई देता है।

मूर्तिपूजकों के लिए, यह मसीहियत के सबसे आश्चर्यचकित करने वाले गुणों में से एक था। मूर्तिपूजक जगत में, दबे कुचलों को पैरों तले रौंदकर; बीमार तथा असहाय लोगों को नजरअंदाज करके व शत्रुओं के साथ वैसा ही व्यवहार करते थे जैसे ''कुत्ता कुत्ते को खाता'' था। उसके विपरीत, मसीही लोग प्रेम करते थे। रोमी सरकार ने मसीहियत से भेंट तलवार के साथ की, लेकिन मसीहियत रोम को प्रेम से मिली और उसे जीत लिया।

इतिहासकार रिजपथ का मत था कि आरम्भिक कलीसिया के विकास का मुख्य कारण यही था।

आज, हम फिलॉसफी के बीच ''नंबर 1'' बनने की होड़ वाले संसार में रहते हैं। परन्तु, सच्चे मसीही आज भी परवाह करते हैं।

शिक्षा के प्रति व्यवहार

दूसरों के प्रति अपने व्यवहार के कारण, आरम्भिक मसीही अपने सब मिलने वालों में सुसमाचार को बांटना चाहते थे (मत्ती 28:18–20;[4] प्रेरितों 8:1, 4)। फिलिप शैफ ने आरम्भिक कलीसिया के विकास के प्रमुख कारण के रूप में यह बताया:

> स्थापित हो जाने के बाद मसीहियत स्वयं ही अपनी सबसे अच्छा मिशनरी थी। यह भीतर से ही स्वाभाविक रूप में बढ़ी। इसने अपनी उपस्थिति से ही लोगों को आकर्षित किया। प्रत्येक मंडली एक मिशनरी समाज के रूप में थी, और प्रत्येक विश्वासी मसीही एक मिशनरी था जिसमें अपने साथियों को परिवर्तित करने के मसीह के प्रेम की ज्वाला थी। ... सैल्सस शॉफिंगली टिप्पणी करता है कि ऊन भरने वाले और चमड़े का काम करने वाले, देहाती तथा अज्ञानी लोग पूरे जोश से मसीहियत का प्रचार कर रहे थे। ... महिलाओं तथा ग़ुलामों तक ने अपने आसपास के लोगों में मसीह के बारे में बता दिया था। ... हर मसीही ने अपने पड़ोसी को, श्रमिक ने अपने साथी श्रमिक को, ग़ुलाम ने अपने साथी ग़ुलाम को, नौकर ने अपने स्वामी तथा स्वामिनी को, अपने मन परिवर्तन की कहानी ऐसे बताई जैसे नाविक जहाज के टूटने पर अपने जीवित बचने की कहानी बताता है।

महासभा ने कहा कि प्रेरितों ने अपनी शिक्षा से पूरे यरूशलेम को भर दिया था (प्रेरितों 5:28)। क्या हमने अपने संसार को, अपने देश को, अपने जिले को, अपने शहर को, या अपने पड़ोस को सुसमाचार से भर दिया है?

प्रार्थना के प्रति व्यवहार

इस अंतिम घटक के बिना, आरम्भिक मसीहियों का मसीहियत के प्रति, अपने जीवनों के प्रति, दूसरों के प्रति और शिक्षा के प्रति कोई प्रभाव न होता। उन्होंने परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को समझ लिया (4:24, 29)। क्या हम प्रार्थना करने वाले लोगों के रूप में जाने जाते हैं? यदि नहीं, तो परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम मन फिराकर उस पर निर्भर होना सीखें!

सारांश

मुझे एक अंतिम आपत्ति सुनाई देती है: ''लेकिन वे हमसे ज्यादा इसलिए सफल थे क्योंकि उस समय काम करना *आसान* था!'' क्या सचमुच आसान था? *लैटर्ज़ टू यंग*

चर्चज़ में अपनी भूमिका में जे.बी. फिलिप्स के ये शब्द सुने:

> थका देने वाले ऐतिहासिक वर्णनों में गए बिना, हमें याद रखना चाहिए कि ये पत्र लिखे गए थे और जिन जीवनों का इनमें हवाला दिया गया है वे मूर्तिपूजा से निकलकर आए थे। उस समय कलीसिया के लिए कोई भवन नहीं होते थे, कोई रविवार नहीं था [संसार द्वारा रद्द किया गया], विश्वास के विषय में कोई पुस्तक नहीं थी। गुलामी, भोग विलास, निर्दयता, मानवीय कष्ट के प्रति बेदर्दी, और लोगों के नीच विचार सब जगह थे। यात्रा करना और संचार के साधन जोखिम भरे और कभी ही मिलते थे; अधिकतर लोग अनपढ़ थे। बहुत से मसीही आज ''अपने समय के संकटों'' की बात करते हुए यह सोचते हैं कि मसीही धर्म को जड़ पकड़ने के लिए अच्छे समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। यह स्मरण करना प्रोत्साहित करने वाला है कि इस विश्वास ने उन परिस्थितियों में जड़ पकड़ी और अद्‌भुत रीति से विकास किया, जब किसी भी बात को केवल कुछ ही सप्ताहों में मिटाया जा सकता था। इन आरम्भिक मसीहियों पर यह संकट था कि इन पर मसीह में विश्वास के द्वारा, परमेश्वर के पुत्र बनने का आरोप था; वे नई विनम्रता के पथ प्रदर्शक अर्थात एक नए राज्य के संस्थापक थे। आज वे सदियों बाद भी हमसे बात करते हैं। शायद यदि हम भी वही विश्वास करें जो वे करते थे, तो हम उसी मंजिल को पा सकते हैं, जिसे उन्होंने पाया था।

आज हमारी मुश्किल एक व्यवहार की है। करोड़ों लोग नरक को जाने वाले मार्ग में हैं, और बहुतों को बिल्कुल भी परवाह नहीं है। कुछ लोग जो किसी यीशु के पीछे चलने लगे थे, वे आज संसार के आकर्षण में फंस गए हैं, और बहुत से लोग इस पर ध्यान नहीं देते। *परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम इस पर ध्यान दें!*

पाद टिप्पणियां

[1]''भले मनों की तलाश'' पाठ में 17:6 पर नोट्स देखिये। [2]मूल प्रवचन के विवरण के लिए ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 29 पर विज़ुअल एड नोट्स देखिये। [3]प्रेरितों 5:13, 14 आरम्भिक कलीसिया में जबरदस्त अनुशासन का परिणाम मिलता है। [4]ध्यान दें कि यीशु की महान आज्ञा में चार ''सब'' अर्थात *सारा* अधिकार, *सब* जातियां, *सब* बातें जो यीशु ने उन्हें सिखाई थीं, और *सदैव* मिलते हैं।